लघु कहानी ''चेतन''

विनोद कुमार पाण्डेय
रामनगर, रूड़की।

चिंतातुर स्नेहा जंगल के बीच पहाड़ी से निकले जलस्रोत से दो बोतल पानी लेकर लौटते वक्त मायूस हो गई। ''घर में अपनी छोटी बहन नेहा, बड़ा भाई सुयश और पापा–मम्मी के लिए दो बोतल पानी पर्याप्त नहीं है,'' बार–बार उसके मन में इसी बात की पुनरावृत्ति हो रही थी। ''घर में बाल्टी भी तो नहीं थी मैं लाती भी तो किसमें लाती,'' मन ही मन बुदबुदाते उसके पैर शुष्क व दरारयुक्त खेत के रास्ते की ओर बढ़ रहे थे। वह स्वयं से प्रश्न पूछ रही थी, ''जंगल में पानी क्यों है? मेरे गांव में पानी क्यों नही है? अरे! मेरे गांव में घने पेड़–पौधे भी तो नहीं हैं। इसी वजह से पानी की किल्लत तो नहीं है। हां शायद यही कारण होगा'' अचानक अपने अंदर की इस चेतना को कार्यान्वित करने के संकल्प ने उसे अपने घर के आस–पास पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया।

- कठिनाइंया मनुष्य के पुरूषार्थ को जगाने के काम आती हैं।
- जहर का भी अजीब हिसाब है, मरने के लिये थोड़ा सा और जीने के लिये बहुत सारा पीना पड़ता है।
- तन अस्थिर रहे तभी अच्छा और मन स्थिर रहे तभी अच्छा।
- जैसे स्वर्ण कितना भी मूल्यवान क्यों न हो, सुगन्ध पुष्प से ही आती है। वैसे ही ज्ञान कितना भी मूल्यवान क्यों न हो, सुगन्ध आचरण से ही आती है।
- भरी जेब ने दुनिया की पहचान करायी और खाली जेब ने अपने और पराये दोनों की।
- दौलत और वक्त में इतना अन्तर होता है कि वक्त को मालूम होता है कि हमारे पास कितनी दौलत है, लेकिन दौलत को ये भी मालूम नहीं होता कि हमारे पास कितना वक्त है।
- शुक्र है कि परिंदों को नहीं पता होता कि उनका मजहब क्या है नहीं तो आसमान से रोज खून की बारिश होती।
- जीवन में वो ही व्यक्ति असफल होते हैं जो सिर्फ सोचते हैं, करते नहीं।
- वक्त भी अजीब सौदागर है जवानी का लालच देकर बचपन ले गया और अमीरी का लालच देकर जवानी ले गया।
- मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे।
- समस्या का नहीं, समाधान का हिस्सा बनो।
- इंसान तब समझदार नहीं होता जब बड़ी–बड़ी बातें करने लगे, वह तब समझदार होता है जब वह छोटी–छोटी बातें समझने लगे।